एक हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा के ख़तरे

इस लेख के शीर्षक का अर्थ निश्चय ही यह है कि मैं प्रिमिलेनियलिज़्म अर्थात हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा को ख़तरनाक मानता हूं। मेरे ऐसा सोचने के कई कारण हैं। मुझे इस शिक्षा के विभिन्न सिद्धांतों में कुछ ऐसी शिक्षाएं दिखाई देती हैं जो सच्चे सुसमाचार के लिए विनाशक हैं और जो नये नियम की शिक्षा के आधार पर ही घात करती हैं।

फिर, मैंने हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा के प्रति समर्पित लोगों के जीवनों में इसके कुछ फल भी देखे हैं। मैंने लोगों को इस शिक्षा से इतना मोह करते देखा है जिससे लगता है कि वे सुसमाचार की महान सच्चाइयों को भी भूल गए हैं जिसके लिए उन्होंने कभी संघर्ष किया था। वे हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा की बात करते, उसका प्रचार करते और उसी के बारे में लिखते हैं। लगता है वे इसके प्रति बहुत कट्टर हो गए हैं। उनके लिए हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा एक महत्वपूर्ण संदेश है जिसका प्रचार करना आवश्यक है। वे ऐसी कलीसियाओं से परहेज करते हैं जो इसे आश्रय देने से इन्कार करती हैं, और वे ऐसी कलीसियाओं को ढूंढ़ते हैं जो शिक्षा सम्बन्धी दूसरी बातों में उनके साथ भिन्नता के बावजूद इस शिक्षा को स्वीकार करती हैं।

एक हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा

प्रिमिलेनियलिज़्म अर्थात हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा के अनुसार भविष्य में पृथ्वी पर विश्वव्यापी धार्मिकता के एक हज़ार वर्ष का समय होगा। इस शिक्षा के अनुसार, मसीह पृथ्वी पर लौट कर एक हज़ार वर्ष के लिए राज्य करेगा। बातें और भी हैं, परन्तु संक्षेप में यही काफ़ी है।

निस्संदेह, बाइबल इस शिक्षा का विरोध कई प्रकार से करती है। यह दिखाती है कि भविष्यवाणी का राज्य पहले ही स्थापित हो चुका है। यह दिखाती है कि मसीह अब दाऊद के सिंहासन पर राज्य कर रहा है। ये बातें इस थ्योरी का विरोध करती हैं और बाइबल में इनकी शिक्षा स्पष्ट रूप से दी गई है।

बाइबल अध्ययन का एक नियम जिसे सामान्यत: माना जाता है वह यह है कि सांकेतिक और अस्पष्ट पदों की व्याख्या सरल आयतों की रोशनी में की जानी चाहिए। परन्तु, प्रिमिलेनियलिस्ट अर्थात एक हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वालों को पहले उन्हें मनवाने या फिर अनदेखा करने के लिए सांकेतिक पदों की व्याख्या और फिर आसानी से समझ आने वाली आयतों की ओर झुकने की आदत होती है।

हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले बाइबल में विश्वास रखने की बड़ी डींग मारते हैं, और दूसरों पर इस पर विश्वास न करने का आरोप लगाते हैं। लगता है कि उनके विचार से जब कोई किसी रूपक को रूपक न माने, तो वह बाइबल में विश्वास नहीं कर रहा होता। रूपात्मक पदों की पहले और फिर आसानी से समझ आने वाली आयतों की व्याख्या करने का प्रयास सच्चाई तक पहुंचने का कोई ढंग नहीं है। बल्कि, यह तो किसी भी कीमत पर उस भ्रान्तिपूर्ण थ्योरी को बनाए रखने का प्रयास है।

हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा इस पर विश्वास करने वालों पर इतनी हावी है कि उनके लिए यह किसी से भी अधिक प्रिय है, चाहे वह उद्धार की योजना हो या खून-खरीदी कलीसिया। इस थ्योरी के कारण इसके मानने वाले ''कलीसिया के युग'' और प्रभु की कलीसिया से जुड़ी शिक्षाओं को दूसरा स्थान देते हैं। आइए देखते हैं कि यह कैसे होता है।

एक हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वालों के ढंग तथा चालाकियां

हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले लोग पुराने नियम के उन पदों को पढ़ते हैं जो राज्य की भविष्यवाणी करते हैं, और वे इस बात से परिचित हैं कि यूहन्ना और यीशु ने इसके ''निकट'' होने की घोषणा की थी। परन्तु, वे इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि इसकी स्थापना नहीं हुई बल्कि इसे स्थगित कर दिया गया था। क्या ऐसा कोई पद है जो बताता हो कि इसे यीशु ने स्थगित कर दिया या ऐसा कोई संकेत ही देता हो ? नहीं। फिर, उन्हें यह विचार कैसे आता है ? वे पुराने नियम में से राज्य और सिंहासन के पदों को पढ़ते हैं, और निष्कर्ष निकालते हैं कि एक सांसारिक, भौतिक राज्य की भविष्यवाणी की गई है। वे यीशु और यूहन्ना द्वारा घोषित राज्य के विषय में वैसे ही सोचते हैं। उन्हें यह पता नहीं चलता कि यीशु ने ऐसे राज्य की स्थापना की है, अत: यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि उसने इसे स्थगित कर दिया था।

लगता नहीं कि हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वालों को भविष्यवक्ताओं द्वारा बताए और यूहन्ना तथा यीशु द्वारा घोषित राज्य के स्वभाव की अपनी धारणा गलत लगे। वे कहते हैं कि दानिय्येल 2:44 में राज्य की भविष्यवाणी की गई थी और यह राज्य रोमी राजाओं के दिनों में स्थापित होना था। वे मानते हैं कि यीशु राज्य की स्थापना के लिए पूरे मन से आया था। परन्तु दावा करते हैं कि राज्य के लिए यहूदी लोग तैयार नहीं थे और उन्होंने इसे स्वीकार नहीं करना था, इसलिए यीशु के लिए इसे स्थगित करना आवश्यक हो गया था।

हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वालों के अनुसार, रोम फिर से बन जाएगा और एक

बार फिर पृथ्वी पर राज्य करेगा। वे यह बात दानिय्येल 2:44 की भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए कहते हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जब लगा कि इटली फिर से आगे बढ़ेगा, तो हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले लेखकों की कलमें बड़ी तेजी से चलने लगी थीं; परन्तु जब प्रमुख शक्तियों को कुचल दिया गया तो उन्होंने लिखना बन्द कर दिया। क्या यह सत्य हो सकता है कि यीशु के समय में उसे स्वीकार न करने वाले यहूदियों की तरह, संयुक्त सेनाओं ने परमेश्वर की योजनाओं को विफल कर दिया?

हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले कहते हैं कि इन मामलों में परमेश्वर की देरी का कारण उन्हें समझ नहीं आता। इससे लगता है कि जब वे किसी योजना को प्रभु की बताते हैं और कोई बात नहीं हो पाती, तो वे निष्कर्ष निकालते हैं कि प्रभु ने इसे स्थगित कर दिया या अपनी योजनाओं को बदल दिया है। इसके स्थान पर, वे यह निष्कर्ष क्यों नहीं निकालते कि परमेश्वर की योजनाओं के बारे में उनके विचार गलत हैं?

एक हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा की उलझनें

जिस राज्य की पुराने नियम में भविष्यवाणी की गई थी, वह स्थापित हो चुका है। इब्रानियों 12:28, कुलुस्सियों 1:13, और प्रकाशितवाक्य 1:9 जैसे पदों में इसका स्पष्ट संकेत है। ये पद राज्य के अस्तित्व का संकेत ही नहीं देते बल्कि इसकी *घोषणा भी करते हैं*। इब्रानियों 12:28 कहता है ''...हम इस राज्य को पाकर जो हिलने का नहीं,...।'' कुलुस्सियों 1:13 में पौलुस के कथन कि परमेश्वर ने ''हमें... अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया'' यही प्रभाव देने के लिए था। प्रकाशितवाक्य 1:9 में यूहन्ना ने घोषणा की कि वह ''...राज्य ...में...'' एक भाई था।

परमेश्वर ने मसीह को दाऊद के सिंहासन पर बिठाने के लिए मुर्दों में से जिलाया (प्रेरितों 2:30, 31); ''उस को मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दहिनी ओर बिठाया'' (इफिसियों 1:20)। मसीह, ''पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन के दहिने जा बैठा'' (इब्रानियों 1:3)। दाऊद का तम्बू (प्रेरितों 15:14–17) आत्मिक रूप से फिर से बनाया गया है; इसलिए, गैर यहूदी भी अब पवित्र लोगों के साथ संगी अधिकारी बनने का अधिकार पा सकते हैं। फिर, पवित्र शास्त्र में यह तुलना संकेत देती है कि कलीसिया ही मसीह का राज्य है। क्योंकि उसकी केवल एक ही देह है, और क्योंकि वह अपने राज्य पर राज करता है और अपनी कलीसिया का सिर है, इसका अर्थ यह है कि वे सभी एक ही देह हैं (इफिसियों 4:4)।

हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले यह नहीं मानते कि राज्य स्थापित हो चुका है, परन्तु वे यह मानते हैं कि कलीसिया स्थापित हो चुकी है। निश्चय ही इसका अर्थ यह है, कि वे यह नहीं मानते कि कलीसिया ही राज्य है। फिर, उनके अनुसार, कलीसिया का परमेश्वर की योजना में क्या योगदान है?

हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा कहती है कि राज्य को स्थगित करने के निर्णय के समय, उसके स्थान पर कलीसिया को राज्य के विकल्प के रूप में बना दिया गया था। इस थ्योरी के

अनुसार, जब यीशु ने देखा कि राज्य स्थापित नहीं हो सकता, तो उसने कलीसिया बनाने की अपनी इच्छा की घोषणा कर दी। यदि यह शिक्षा सही होती, तो फिर कलीसिया बनाने की यीशु की प्रतिज्ञा के बाद, राज्य के निकट होने सम्बन्धी किसी दूसरी घोषणा की अपेक्षा न होती। इसके विपरीत, हमें वही बात मिलती है। इस एक तथ्य से ही हज़ार वर्ष के राज्य की थ्योरी सदा के लिए समाप्त हो जानी चाहिए। लूका 10:9 में सत्तर चेलों को यह प्रचार करने के लिए कहा गया था कि, ''परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है।'' यह बात यीशु के अपनी कलीसिया बनाने की प्रतिज्ञा के बाद की गई थी (मत्ती 16:18)। हमें कैसे मालूम? लूका 10 में सत्तर को दी गई सीमित आज्ञा अर्थात लूका 9 में यीशु के रूपान्तरण के *बाद* ही दी गई थी। परन्तु, मत्ती 16 में दी गई अपनी कलीसिया बनाने की यीशु की प्रतिज्ञा, उसके रूपान्तरण से *पहले* दी गई थी, जिसे मत्ती 17 में भी लिखा गया है। इसलिए, लूका 10 में राज्य के निकट होने की यीशु की बात मत्ती 16 में अपनी कलीसिया बनाने की प्रतिज्ञा के *बाद* कही गई थी। अन्य शब्दों में, यीशु ने कलीसिया बनाने के अपने उद्देश्य की घोषणा करने के बाद ही घोषणा की थी कि राज्य ''निकट'' है।

कलीसिया की यीशु की घोषणा का यह अर्थ नहीं था कि राज्य की प्रतिज्ञाओं को छोड़ दिया गया है। सच्चाई यह है कि कलीसिया तो परमेश्वर के मन में बराबर रही। इफिसियों 3 में इसकी और इसकी परिकल्पना की बात करते हुए, पौलुस ने कहा, कि यह ''उस सनातन मनसा के अनुसार [था], जो उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी'' (इफिसियों 3:11)। इसी अध्याय में, अपने अद्‌भुत स्तुतिगानों में, पौलुस ने कहा, ''कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन''(इफिसियों 3:21)। ''पीढ़ी से पीढ़ी तक'' अभिव्यक्ति पर ध्यान दें। हां, कलीसिया परमेश्वर के अनन्त उद्देश्य में थी, और उसकी महिमा इसी के द्वारा ''पीढ़ी से पीढ़ी तक'' होती रहेगी। पौलुस को लगता था कि कलीसिया उस उद्देश्य का पूरा होना है जो परमेश्वर के मन में था, जिसकी भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी और जिसका मसीह ने ऐलान भी किया था।

यदि एक हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा सही है, तो कलीसिया परमेश्वर के उद्देश्य में कैसे शामिल हो गई? यह परमेश्वर के उद्देश्य में नहीं हो सकती थी। पुराने नियम की एक भी भविष्यवाणी इसमें कैसे पूरी हो सकती थी? कोई नहीं। इस शिक्षा के अनुसार, मूल उद्देश्य व योजना राज्य के लिए थे, परन्तु राज्य के ठुकराए जाने के बाद कलीसिया को एक विकल्प के रूप में दे दिया गया था।

क्या मसीही युग संयोग से मिला युग है? क्या यह राज्य का निराशाजनक उतार है? क्या यह राज्य के आने तक उसके खाली स्थान को भरने का विकल्प है? क्या यह राज्य करने वालों के लिए तैयारी का स्थान है? नहीं।

इसलिए, यह समझना कठिन नहीं है कि कलीसिया, उद्धार की योजना और इस युग की विशेष बातें हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वालों के विचार में इतना कम महत्व कैसे रखती हैं। यह शिक्षा स्वयं ही उन्हें *नियुक्त* करती है। एक बड़ी घटना, अर्थात चरम तो अभी आने वाला है और वे उसी की प्रतीक्षा में हैं। उस चरम में क्या है? एक सांसारिक राज्य

जिसमें यहूदी मत की परम्पराएं तथा रीतियां फिर से लागू हो जाएंगी! मसीहियत की सच्ची आत्मा का कितना बड़ा विनाश है यह शिक्षा! यह तो परछाइयों की ओर लौटना है! यह ख़तरनाक है।

सारांश

यदि परमेश्वर का कोई राज्य है या कभी होगा तो वह केवल कलीसिया ही है। यह उसके अनन्त उद्देश्य का भाग थी। नया नियम इसे बहुत महत्वपूर्ण स्थान देता है। यह महान है; इसके सामने दूसरे सभी संस्थान बौने लगते हैं। यीशु ऊपर स्वर्ग में दाऊद के सिंहासन से इस पर राज करता है। उसने तब तक राज करना है जब तक उसके सभी शत्रु उसके पांव तले न आ जाएं। ''अन्तिम बैरी'' जिसका नाश होना है वह ''मृत्यु'' है (1 कुरिन्थियों 15:25, 26)। इसका नाश अन्तिम दिन दुष्टों व धर्मियों के जी उठने से होगा (यूहन्ना 5:28, 29; 6:44; 12:48)।

''जी उठना'' होगा, जैसा कि प्रेरितों 24:15 में बताया गया है। शाब्दिक दो हज़ार वर्ष के काल वाले दो पुनरुत्थान नहीं होंगे, जिसमें पहले धर्मी और फिर अधर्मियों को जिलाया जाए। अन्त के दिन जब मुर्दे जी उठेंगे और शत्रु का नाश हो जाएगा, तो मसीह राज्य को पिता परमेश्वर के हाथ सौंप देगा। यह वह राज्य है जिस पर अधोलोक के फाटक प्रबल नहीं हो सकेंगे अर्थात वह न हिलने वाला राज्य है, जो सदा-सदा तक बना रहेगा।

मसीही लोगों का विश्वास है कि आत्मा के लिए एक घर है, और वे उस घर को पाने की इच्छा करते हैं। यह किसी सांसारिक निवास की आशा नहीं, बल्कि ''एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिए है'' (1 पतरस 1:4)।